IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श

उमा शर्मा

पूर्व शोधार्थी (एम0 फिल0 हिन्दी)

हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय,

जाट पाली, महेन्द्रगढ़ (हरि0)

सारांश :–

आधुनिक युग में स्त्री विमर्श, स्त्री मुक्ति, नारीवाद नारी सशक्तिकरण का शोर चारों तरफ है। वर्षों से होते आए शोषण और दमन के प्रति स्त्री चेतना ने ही स्त्री विमर्श को जन्म दिया है। महादेवी वर्मा की 'श्रृंखला की कड़ियाँ' नारी शक्तिकरण का सुंदर उदाहरण हे।

प्रेमचंद से लेकर आज तक अनेक पुरूष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया परंतु उस तरह नहीं लिखा गया जिस तरह स्वयं महिला लेखिकाओं ने लिखी है। उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, अनामिका आदि लेखिकाओं ने नारी मन की भावनाओं एवं आप बीती घटनाओं को उकेरना शुरू किया। स्त्री विमर्श नारी की आत्मचेतना, आत्मगौरव, समानाधिकार का दूसरा नाम है।

मुख्य शब्द – स्त्री विमर्श, स्त्रीवाद, उपनिवेश, पितृसत्ता, विमर्शकार

प्रस्तावना :–

अनामिका आठवें दशक से कविताएँ लिख रही हैं। इनके प्रारंभिक कविता संग्रह में अपने समय और आस–पास के जीवन के साथ स्त्री जीवन के चित्र भी हैं। इनकी कोमल भावनाओं तथा विवेकशील और संवेदनशील कलात्मक संयोजन के कारण अनामिका की कविताएँ अलग पहचान बनाती है। अनामिका की कविताएँ औरतों के जीवन संदर्भों का चालीसा है। इनकी कविताओं के केन्द्र में स्त्री है, स्त्री संवेदना है, मार्मिकता है, स्त्री का स्त्री होने का दुःख, पीड़ा, उत्पीड़न इन कविताओं के साथ लगा है। कविता मात्र शब्दों का संयोजन नहीं बल्कि कोमल भावनाओं का संयोग है। अनामिका की काव्य अनुभूतियाँ छोटी–छोटी संवेदनाओं से ही सृजित होकर एक बड़ी रचना के रूप में सामने आती है।

अनमिका 1965–70 के जमाने में, जब वे हाई स्कूल में पढ़ती थी, उस समय उनाक पहला काव्य संग्रह 1975 में प्रकाशित हुआ – 'शितल स्पर्श कए धूप को'। प्रकृति की रमणीयता, उसकी उदासी, बेबसी और रूखेपन आदि के चित्रण इन कविताओं में मिलते है।

उद्धेश्य :–

एक कविता के रूप में अनामिका को विशिष्ट पहचान 1990 में प्रकाशित काव्य संग्रह 'समय के शहर में' से मिली है। अनामिका के विषय में ठीक ही कहा गया है कि ''वे सिर्फ कविता में ही नहीं बल्कि अपने सम्पूर्ण लेखन में नारी दृष्टि की एक उदार सांस्कृतिक प्रवक्ता बनकर उभरी है। उनका स्वर नई सहस्त्राब्दी का स्वर है। जिसकी स्थिर हलचलों में कुलबुलाते कोमल सवाल अपनी तमाम फितरतों के साथ स्थापित विमर्शों को अस्थिर करते चले जाते है।[1]

ये अपनी कविता में स्त्री आकांक्षा के प्रश्न सहज निकाल लेती है। 'बेजगह' कविता में लिखती हैं –

''जिनका कोई घर नहीं होता

उनकी होती है भला कौन–सी जगह?

कौन–सी जगह होती हैं ऐसी

जो छूट जाने पर

औरत हो जाती है''[2]

अनामिका अपनी कविताओं में सामाजिक दृश्यों का खुली आँख से सामना करती हैं। निजता और सामाजिकता के संबंध को अंतर्जगत् और बहिर्जगत् के द्वन्द्व और तनाव को अनामिका ने अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया हैं। ये प्रकृति, मानव के प्रेम और सौंदर्य को अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त करती है। अनामिका अपनी कविताओं के माध्यम से पढ़ने वाले के सामने एक सजीव चित्रण प्रस्तुत करने में सफल हुई हैं। इनकी कविताएँ किसी वस्तु, व्यक्ति या परिवेश को अनदेखा नहीं करती हैं। प्रेम, दोस्ती, नारी की पीड़ा। उसकी इच्छाएँ सब इनकी कविताओं में मौजूद हैं। अनामिका की कविताएँ स्त्री चिंतन का नया आयाम खोलती हैं। स्त्री चेतना, स्त्री मुक्ति का द्वार है जो समाज में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्थापित करने के लिए आवश्यक बन गई हैं। 'अनुवाद' कविता में ये लिखती हैं :–

''इस स्पेस का अनुवाद

विस्तार नहीं 'अंतरिक्ष' करूँगी मैं

क्योंकि इसमें मैंने

उड़नतश्तरी छोड़ रखी है।''[3]

'मौसियाँ' कविता नारी दुःख को सहने का दूसरा रूप प्रकट करती है। मौसियाँ बारिश में धूप की तरह आती है। कहीं–कहीं संकेतों द्वारा पूरा दृश्य स्पष्ट होता जाता है –

''चटनी अचार मूंगबड़ियाँ और बेस्वाद संबंध

चटपटा बनाने के गुप्त मसाले और नुस्खे

सारी उन तकलीफों के जिन पर

ध्यान भी नहीं जाता औरों का।''[4]

जो स्त्री को उपभोग की वस्तु के रूप में देखने वाला पुरूषवादी समाज है, 'स्त्रियाँ' कविता उस पर एक प्रहार है।

''भोगा गया हमकों

बहुत दूर के रिश्तेदारों के

दुःख की तरह

एक दिन हमने कहा

हम भी इंसान हैं,

हमें कायदे से पढ़ों एक–एक अक्षर

जैसे पढ़ा होगा बी.ए. के बाद

नौकरी का पहला विज्ञापन।''[5]

ऐसा माना जाता है कि भारतीय स्त्री अपने भावों, विचारों, आकांक्षाओं और तर्कों से नहीं सोचती है। अपने अस्तित्व का बोध स्त्री विमर्श की पहली शर्त है। अनामिका की 'उड़ान' कविता में अस्तित्व और अस्मिता बोध देखने को मिलता है –

''किसकी नूरजहाँ हूँ मैं?

इस आँधियारे कमरे में यों

टीन खुरचती आटे की?''[6]

सभ्यता और समाज के निर्माण में स्त्री की भागीदारी को नकारा जाता है उसे उपेक्षित किया जाता है। उपेक्षित भाव उसके जीवन में खालीपन लाता है। अनामिका 'प्रत्यभिज्ञा' कविता में प्रश्न करती हैं –

''क्या खुद मैं अपनी पड़ोसिन हूँ?

क्या मैंने खुद से की है नमस्ते?

क्या मेरे दो हाथ जुड़े हैं कभी

अपने भीतर के उस 'मैं' की खातिर?''[7]

नारी पर सदियों से अनाचार, अत्याचार होते आए हैं। अनामिका ने अपनी कविताओं में हिंसा, अत्याचार और अनाचार का सजीव एवं मार्मिक चित्र पाठक के सामने प्रस्तुत किया है –

''पीठ नीली

चेहरा पीला

लाल आँखें और

जख्म हरे

कुदरत के सब रंगों की बोतल

उलट–पलट जाती हैं मुझ पर

उनके आते ही।''[8]

जब स्त्री शोषण से बचना चाहती है तथा अपने अधिकारों की मांग करने लगती है, तब उसकी भाषा तथा भाव आक्रोश एवं विद्रोह से भरे होते हैं। अनामिका का अनुभव संसार बहुत बड़ा है। लोक और स्त्री जीवन की अनुभूति का ऐसा अद्भुत संगम बहुत कम लोगों की काव्य अनुभूतियों में मिलता है।

निष्कर्ष :–

समकालीन कवियों में अनामिका अपनी एक अलग भूमिका एवं पहचान बना रही हैं। इनकी कविताओं में आधुनिक प्रसंगों के साथ पुरानी यादों एवं गांव की संस्कृति की भी साफ तस्वीर नजर आती है। प्राकृतिक रूप से स्त्री को सहना पड़ता है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनामिका की कविताओं में स्त्री के विविध रूप देखने को मिलते हैं। अनामिका की कविताओं में स्त्री विमर्श मुख्यतः देखने को मिलता है। अनामिका भारतीय परिवेश में पारिवारिक और सामाजिक स्थितियों में फंसी हुई नारियों की दुर्दशा का चित्रण करती है।

अनामिका अनुभव की व्यापकता में धनी है। इनकी कविताओं में स्त्री संवेदना के अनेक क्षेत्र हैं। ये गृहस्थ स्त्री से लेकर शिक्षित स्त्री तक के सफर को चित्रित करती हैं। आज वे समय और समाज के सारे सवालों से टकराती हैं। समस्याओं और घटनाओं को देखने का उनका दृष्टिकोण एक संवेदनशील नारी का दृष्टिकोण है। इनकी रचनाओं में स्त्री प्रतिरोध की गहरी समझ शामिल होने से समकालीन हिन्दी कविता में एक विशिष्ट पहचान बनकर सामने आयी है। अनामिका कहती हैं, भीतरी आंदोलन झेलकर ही कोई बाहरी आंदोलन तक पहुँचता है।

संदर्भ सूची :–

1. अनामिका, कवि ने कहा : कुछ चुनी हुई कविताएँ, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र0 सं0 2016, पृ0 सं0 24
2. पूर्ववत्, पृ0 सं0 11–12
3. पूर्ववत्, पृ0 सं0 124
4. पूर्ववत्, पृ0 सं0 14
5. पूर्ववत्, पृ0 सं0 9
6. अनामिका, दूब–धान, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन पृ0 37
7. पूर्ववत्, पृ0 सं0 102
8. अनामिका खुरदुरी हथेलियाँ, राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली पृ0 सं0 46